वीरशैव – लिंगायत

Dr. Kumar Hadimani
skhadimani@gmail.com

धर्म मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का एक सोपान है। जीवन में शांति, समृद्धि और तृप्ति का अनुभोग करने का एक मार्ग है। धर्माचरण में भारत ने एक विशिष्ट स्थान और मान पा लिया है। आज कल वीरशैव और लिंगायत दोनों बहुचर्चित शब्द हैं। यहाँ ये दोनों एक ही धर्म है या अलग– अलग हैं इस चर्चा का एक अवलोकन किया गयाहै।

कर्नाटक को मद्दे नजर रखते हुए बौद्ध, जैन, वैदिक (आगमिक) धर्मों के रूप में शैव भी एक प्रवासी धर्म है। कश्मीर मूल के अट्ठाईस आगमों को मान्य किए यह शैव धर्म बादामी चालुक्य के काल के पूर्व ही कर्नाटक में प्रवेश कर लिया था। ये अपने अस्तित्व की स्थापना करने में परस्पर संघर्ष में आत्मवादी जैन, वैदिक (आगमिक) शैव धर्म मिलकर आत्मवादी बौद्ध धर्म को पहले विनाश कर दिए बाद में आत्म-परमात्मा वादी वैदिक (आगमिक), शैव धर्म मिलकर मात्र आत्मवादी जैन धर्म को दुर्बल कर देते हैं। इसके बाद बचे इन दोनों प्रबल धर्मों में समय बीतते वैदिक(आगमिक) धर्म ने शैव धर्म पर अपना प्रभाव डालकर उसे अर्ध वैदिक बना दिया।

ये तीनों प्रवासी धर्म (वैदिक, शैव, जैन) हमारी धरती पर अपने– अपने देवताओं के मंदिरों की स्थापना कर दिए। तीर्थंकर बसदियों का निर्माण करके उनके अंदर– बाहर अपने रामायण, महाभारत, जैनपुराण, शैवपुराणोक्त घटनाओं के शिल्प निर्मित किए। इन धर्मों के प्रभाव से स्थानीय कन्नड की जनता बसदियों के निर्माण एवं प्रबंधन के लिए अपना श्रम व्यय करती है। अपने को छुआछूत की दृष्टि से देखने पर भी उनके अर्चकों को दान और आचार्यों को दक्षिणा देकर झूठे धन्यता भाव से तृप्त हो गये।

वीरशैव

अट्ठाईस आगमों से ओतप्रोत यह शैव धर्म कालानुसार पाशुपत, लकुलीश (काळामुख), कपालिक (महाव्रती), श्रोत्रीय शैव (शिवसमय, शुध्दशैव, वीरमाहेश्वर) नामक चार भागों में विभाजित हो गया।

इस श्रोत्रीय शैव के सामान्य शैव, मिश्र शैव तथा शुद्ध शैव नामक शाखाओं में "वीरशैव" शाखा बसवोत्तर काल की सृष्टि होने के कारण वीरशैव शैव धर्म की एक वृत्ति है न कि एक स्वतंत्र धर्म।

मूलतः आंध्रप्रदेश के श्रोत्रीय शैव आराध्य (चतुराराध्य) आप के वीरशैव पंचपीठाधिपति हैं। वीरशैव पंचपीठाधिपति मूलतः चतुरार्य कहने के लिए सन १६९८ में रचित "संपादनेय पर्वतेशन चतुरार्य चरिते" कृति एक उत्तम आकार साक्षी है। रंभापुरी के रेणुक, उज्जयनी के मरूळसिद्ध, केदार के भीमाशंकर और श्रीशैल के पंडिताराध्य ही ये चतुरार्यहैं। ये सोलहवीं शती के पश्चात अपने प्राबल्य के विस्तार हेतु पांचवे पीठ के रूप में काशि पीठ का सृजन कर लेते हैं। इसे "ज्ञानसिंहासनपीठ" नामकरण कर लेते हैं। १५ वी और १६ वी शती के लिंगायत पुनरूत्थान काल से जाना जाता है। क्योंकि चतुरार्य अत्यंत प्रवर्धमान पर आते हुए अपने आप को जगदगुरू कहलाने लगे। जब जगदाचार्य पंचपीठाधीश हो गये तब एक धर्म ग्रंथ की आवश्यकता महसूस होने लगी। उसके लिए षट्स्थल के रूप में १०१ स्थल और वेद, आगम, शास्त्रों से कुछ अंशों को मिलाकर "सिद्धांत शिखामणी" नामक ग्रंथ की सृष्टि हो जाती है।
जगदगुरू रेणुकाचार्य लिंग से उद्भव हो कर वीरशैव धर्म की स्थापना करने के प्रति अथवा द्वापर युग के पूर्व में प्रारंभ हुए धर्म कहने के लिए कोई भी सबूत नहीं है। और तो और रामायण, महाभारत, वेद, आगम, पुराणों में वीरशैव धर्म, सिद्धांत शिखामणि और पंचाचार्यों के प्रति कहीं भी उल्लेख नहीं है। बसवोत्तर काल के इतिहासकार पालगुर्की सोमनाथ, केरेपद्मरस, केरेपद्मनांक, हरिहर, चामरस, राघवांक आदि कवियों की काव्य कृतियों में वीरशैव, सिद्धांत शिखामणी और पंचाचार्यों के प्रति गमनार्ह उल्लेख नहीं मिलते। अध्यतन अनुसंधान से यह प्रतीत होता है कि ये पंद्रहवी और सोलहवी शती से प्रचलन में आए शब्द हैं।

लिंगायत

बसव पूर्व युग के प्रवासी धर्मों (वैदिक, शैव) के अन्याय और अतिरेक के संदर्भ में स्थानीय श्रमिक वर्ग जैसे गडरिए, केवट, मोची, डोहर, मादार, पांचाळ, धोबी, किसान आदि कई समुदायों के स्त्री-पुरूषों में अस्मिता को जागृत करते हुए उत्तर भारत के धार्मिक यजमान संस्कृति के खिलाफ (मुख्यतः वैदिक शैवों के खिलाफ) बसवण्णा जी ने आंदोलन प्रारंभ किया। इसके परिणाम स्वरूप :

१. देवताएँ नहीं है देव है।
२. जाति नहीं है वृत्ति (कायक) हैं।
३. स्त्री जाति पुरूष जाति नहीं है, मनुष्य जाति है।

४. व्यक्तिवाद सोहम पूर्ण धर्म नहीं है; समाजवादी दासोहम पूर्ण धर्म है।

ये ही कुछ पर्याय सिद्धांत समाज में सृष्टि हो गए। इसके फलस्वरूप 'लिंगायत' नामक नया धर्म कन्नड प्रदेश में आकर प्राप्त कर लेता है।

श्रेणीकृत रहित, भेदभाव रहित, जात्यातीत ओहदे से मुक्त दयापर राय के श्रेष्ठ धर्म, समता का धर्म। कायक दासोह सिद्धांतों के आधार पर प्राणि, पशु, पक्षी आदि सकल जीवात्मा को प्यार किए अनुपम आचरण के विशिष्ट धर्म है। अष्टावरण ही अंग, पंचाचार ही प्राण, षट्स्थल ही आत्मा हो कर इष्टलिंग एक देवोपासना से आध्यात्म जगत में एक नया अध्याय का प्रारंभ हो जाता है।

आदि बसवण्णा अनादि लिंग कहते हैं;

झूठ, झूठ यह बात सुन नहीं सकते

आदि लिंग अनादि बसवण्णा

लिंग का उद्भव बसवण्ण के उदर में होता है।

जंगम का उद्भव बसवण्णा के उदर में होता है।

प्रसाद का उद्भव बसवण्णा के उदर में होता है।

यह समझ गया कि इन त्रिविधों के लिए बसवण्णा ही कारणीभूत है।

कूडलचेन्नसंगम देवय्या।

चेन्नबसवण्णा जी के लिंगायत धर्म और पंचाचार्य के वीरशैव धर्म दोनों एक- दूसरे से विरूद्ध हैं। यह निम्मलिखित इन अंशों से समझ सकते हैं।

अवैदिक लिंगायत और वैदिक वीरशैव धर्म दोनों विरोधी सिद्धांतों के आधार पर स्थित होने के कारण हमारे धार्मिक, दार्शनिक, सैद्धांतिक आचरणों की स्पष्टता अनिवार्य और हम सब की जिम्मेदारी भी है।

संदर्भ:

१. डॉ. एम. एम. कलबुर्गी 'मार्ग' संपुट १-७

२. पंडित डॉ. सिद्धगंगाय्या 'सिद्धांतशिकामणी'

३. डॉ. हुन्सल "द लिंगायत मूवमेंट, ए सोशियल रेवलूशन इन कर्नाटक"

४. डॉ. एम. एम कलबुर्गी "शासनगळल्ली शरणरू" और अनुसंधान आलेख

५. आर्थर माइल्स "द ल्यांड आफ लिंगम"

६. रमजान दर्गा "शरणर समग्र क्रांति"

बसवण्णा जी के लिंगायत धर्म और पंचाचार्य के वीरशैव धर्म दोनों एक दूसरे के विरूद्ध हैं; यह निम्नलिखित अंशों से समझ सकते हैं–

	लिंगायत	वीरशैव
धर्मगुरू	बसवण्णा जी	स्थावर लिंगोद्भावित रेणुकाचार्य जी।
पूजा विधान	एक देवोपासक, इष्टलिंग योग पूजा विधान (मूर्ति पूजा नहीं)	बहु देवोपासक तथा मूर्ति पूजक।
गुरू	प्रज्ञा ही गुरू	पंचाचार्य
धर्मग्रंथ	वचन संपुट	सिद्धांत शिखामणि।
नायकगण	७७० सारे अमरगण नायक हैं।	अमर गणों की गणना नहीं की जाती है।
संप्रदाय	वचन संप्रदाय	वैदिक आगमिक संप्रदाय
सिद्धांत	कायक सिद्धांत बसवाद्वैत (शक्ति विशिष्टाद्वैत)	धर्म सिद्धांत, द्वैत सिद्धांत
संस्कृति	अनुभवमंडप महाघर की संस्कृति	देवालय, मठ- मंदिरों की संस्कृति
पद्धति	जाति रहित जंगम पद्धति	जाति जंगम पद्धति
समानता	जाति, कुल, गोत्र से परे धर्म सभी को समान अधिकार	जाति, उच्च- नीच हैं। सब समान नहीं है। स्त्री को समान अधिकार नहीं है।
परंपरा	"प्रज्ञा ही गुरू" मुझसे कोई छोटा नहीं।	गुरू, भक्त अलग- अलग हैं। भक्त गुरू का गुलाम बन के रहना चाहिए। गुरू ही बडे। बाकी सब छोटे।
यकीनन	स्वर्ग, नरक, अंधविश्वास, ज्योतिष्य और पंचांगों पर यकीन नहीं करते। (आचार ही स्वर्ग है अनाचार ही नरक है)	स्वर्ग, नरक, अंधविश्वास, ज्योतिष्य और पंचांगों पर यकीन करते हैं।

सूतक	पंचसूतक नहीं हैं।	पंचसूतक हैं।
आचरण	होम, हवन और वेद घोष नहीं हैं।	होम, हवन और वेद घोष हैं।
उत्सव	आडी- तिरछी पालकी उत्सव नहीं है।	आडी- तिरछी पालकी उत्सव है।

अवैदिक लिंगायत और वैदिक वीरशैव धर्म एक दूसरे के विरोधी सिद्धांतों पर खडे हैं। इसलिए हमारे धार्मिक, दार्शनिक, सैद्धांतिक आचरणों की स्पष्टता अनिवार्य है और यह हम सब की जिम्मेदारी भी है।

****